International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

राजस्थान में जाति आधारित समीकरणों की वर्तमान प्रवृत्तियाँ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

राजेश कुमार[1],डॉ कमल कुमार भड़िया[2]

[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावटी विश्वविद्यालय, सीकर
[2]सह आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावटी विश्वविद्यालय, सीकर

सार (Abstract)

राजस्थान की राजनीति लंबे समय से जातिगत सामाजिक संरचना पर आधारित रही है। राज्य में राजपूत, जाट, गुर्जर, मीणा, ब्राह्मण, दलित तथा अन्य पिछड़ा वर्ग राजनीतिक दलों की रणनीतियों के प्रमुख आधार रहे हैं। किंतु वर्तमान समय में शिक्षा, नगरीकरण, सोशल मीडिया, युवा मतदाता, आर्थिक आकांक्षाओं तथा कल्याणकारी योजनाओं के प्रभाव से जाति आधारित राजनीतिक समीकरणों में उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। यद्यपि जाति अभी भी चुनावी राजनीति का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है, परन्तु विकास, सुशासन, रोजगार तथा सामाजिक न्याय जैसे मुद्दे समानांतर रूप से प्रभावी होते जा रहे हैं। इस शोध-पत्र का उद्देश्य राजस्थान में जातिगत राजनीति की वर्तमान प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना तथा भविष्य की संभावनाओं का अध्ययन करना है।

मुख्य शब्द (Keywords): राजस्थान, जाति, राजनीति, सामाजिक न्याय, चुनाव, मतदान व्यवहार, राजनीतिक दल।

1. प्रस्तावना

भारतीय लोकतंत्र की सफलता का आधार विविधता में निहित है। राजस्थान का सामाजिक ढाँचा अनेक जातियों एवं समुदायों से निर्मित है, जिनकी राजनीतिक भूमिका ऐतिहासिक रूप से अत्यंत

प्रभावशाली रही है। स्वतंत्रता के बाद से राज्य की राजनीति में विभिन्न जातीय समूहों का प्रभाव समय-समय पर बदलता रहा है।

पिछले एक दशक में राजस्थान की राजनीति में अनेक नए परिवर्तन देखने को मिले हैं। राजनीतिक दल अब केवल जातिगत समीकरणों पर निर्भर नहीं रहकर विकास, रोजगार, किसान हित, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक सुरक्षा जैसे मुद्दों को भी प्राथमिकता दे रहे हैं। इसके बावजूद टिकट वितरण, चुनावी गठबंधन तथा मंत्रिमंडल गठन में जातीय संतुलन आज भी एक महत्वपूर्ण तत्व बना हुआ है।

2. राजस्थान की जातिगत राजनीतिक संरचना

राजस्थान की प्रमुख जातियाँ निम्नलिखित हैं— राजपूत, जाट, गुर्जर, मीणा (अनुसूचित जनजाति), ब्राह्मण, वैश्य, दलित समुदाय, अन्य पिछड़ा वर्ग

इन समुदायों की जनसंख्या, सामाजिक स्थिति तथा क्षेत्रीय प्रभाव अलग-अलग होने के कारण राजनीतिक दल प्रत्येक चुनाव में इनके समर्थन को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

3. वर्तमान जातिगत राजनीतिक प्रवृत्तियाँ

(क) जाति से विकास आधारित राजनीति की ओर झुकाव

युवा मतदाताओं के बीच शिक्षा एवं रोजगार प्रमुख चुनावी मुद्दे बन रहे हैं। जातीय पहचान का प्रभाव बना हुआ है, किंतु विकास, सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा रोजगार को अधिक महत्व मिलने लगा है।

(ख) क्षेत्रीय जातीय नेतृत्व का उभार

विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय जातीय नेताओं का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। अनेक विधानसभा क्षेत्रों में उम्मीदवार के चयन में स्थानीय सामाजिक समीकरण निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

(ग) सोशल मीडिया की भूमिका

डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने जातीय संगठनों को नई पहचान प्रदान की है। फेसबुक, व्हाट्सएप तथा एक्स (पूर्व ट्विटर) जैसे माध्यम राजनीतिक लामबंदी में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

(घ) युवाओं का बदलता मतदान व्यवहार

युवा मतदाता केवल जाति के आधार पर मतदान करने के बजाय रोजगार, भ्रष्टाचार, पारदर्शिता तथा सुशासन जैसे मुद्दों को भी महत्व दे रहे हैं।

4. प्रमुख जातीय समूहों की राजनीतिक स्थिति

राजपूत

राजपूत समुदाय लंबे समय से राज्य की राजनीति में प्रभावशाली रहा है। वर्तमान में भी नेतृत्व स्तर पर इसका महत्वपूर्ण स्थान बना हुआ है।

जाट

जाट समुदाय पश्चिमी एवं उत्तरी राजस्थान में निर्णायक भूमिका निभाता है। किसान आंदोलनों एवं कृषि नीति के कारण यह समुदाय राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत सक्रिय है।

गुर्जर

आरक्षण आंदोलन के कारण गुर्जर राजनीति राज्य की महत्वपूर्ण शक्ति बन चुकी है।

मीणा

अनुसूचित जनजाति के रूप में मीणा समुदाय पूर्वी राजस्थान में प्रभावशाली राजनीतिक स्थिति रखता है।

दलित एवं ओबीसी

सामाजिक न्याय तथा आरक्षण की नीतियों के कारण इन वर्गों का राजनीतिक महत्व निरंतर बढ़ रहा है।

5. राजनीतिक दलों की रणनीतियाँ

राजस्थान में प्रमुख राजनीतिक दल जातिगत संतुलन को ध्यान में रखते हुए—

टिकट वितरण,चुनाव प्रचार, संगठन निर्माण, मंत्रिमंडल गठन, चुनावी घोषणापत्र तैयार करते हैं।

हाल के वर्षों में राजनीतिक दलों ने महिलाओं, युवाओं तथा नए मतदाताओं को भी जातिगत समीकरणों के साथ जोड़कर व्यापक सामाजिक गठबंधन बनाने का प्रयास किया है।

6. वर्तमान चुनौतियाँ

राजस्थान की जातिगत राजनीति के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं—

सामाजिक ध्रुवीकरण, आरक्षण संबंधी विवाद, जातीय संगठनवाद, क्षेत्रीय असमानता, युवाओं में बढ़ती अपेक्षाएँ, आर्थिक विषमता इन चुनौतियों के कारण केवल जाति आधारित राजनीति भविष्य में पर्याप्त नहीं मानी जा सकती।

7. बदलते चुनावी रुझान

हाल के विधानसभा चुनावों में निम्न प्रवृत्तियाँ स्पष्ट दिखाई देती हैं—

- उम्मीदवार की व्यक्तिगत छवि का महत्व बढ़ा है।
- महिला मतदाताओं की भूमिका अधिक प्रभावशाली हुई है।
- कल्याणकारी योजनाएँ मतदान व्यवहार को प्रभावित कर रही हैं।
- सोशल मीडिया चुनाव प्रचार का प्रमुख माध्यम बन गया है।
- जातिगत समीकरणों के साथ विकास आधारित मुद्दों का प्रभाव बढ़ा है।

8. भविष्य की संभावनाएँ

आने वाले वर्षों में राजस्थान की राजनीति में निम्न प्रवृत्तियाँ और मजबूत हो सकती हैं—

- जाति एवं विकास आधारित राजनीति का मिश्रित मॉडल।
- युवाओं की बढ़ती राजनीतिक भागीदारी।
- डिजिटल चुनाव प्रचार का विस्तार।
- सामाजिक न्याय एवं आर्थिक विकास के बीच संतुलन।
- महिलाओं एवं नए मतदाताओं का बढ़ता प्रभाव।

9. निष्कर्ष

राजस्थान की राजनीति में जाति आज भी एक महत्वपूर्ण राजनीतिक वास्तविकता है, परंतु इसका स्वरूप निरंतर परिवर्तित हो रहा है। वर्तमान समय में जातिगत पहचान के साथ विकास, सुशासन, रोजगार, शिक्षा तथा सामाजिक सुरक्षा जैसे मुद्दे भी समान रूप से महत्वपूर्ण बन चुके हैं। भविष्य में राजनीतिक दलों को केवल जातिगत समीकरणों पर निर्भर रहने के बजाय समावेशी विकास,

सामाजिक न्याय तथा सुशासन आधारित राजनीति को प्राथमिकता देनी होगी। यही प्रवृत्ति राजस्थान के लोकतांत्रिक विकास को अधिक सुदृढ़ बना सकती है।

संदर्भ (APA शैली)

1. Jaffrelot, C. (2003). India's Silent Revolution. Permanent Black.
2. Jodhka, S. S. (2012). Caste. Oxford University Press.
3. Kothari, R. (1970). Politics in India. Orient Longman.
4. Pai, S. (2013). Dalit Assertion and the Unfinished Democratic Revolution. Penguin.
5. Election Commission of India. (2023). Statistical Reports of Rajasthan Assembly Elections.
6. Government of Rajasthan. Economic Review Rajasthan (Latest Edition).
7. Yadav, Y. (1999). Electoral Politics in India. Economic and Political Weekly.
8. Shah, G. (2002). Social Movements and the State. Sage Publications